राष्ट्र की आवाज राष्ट्र की भाषा में

अक्षर संवाद

वर्ष 09
अंक 11
पृष्ठ 04
मूल्य 1 रुपये
01 मई से 15 मई 2025
जमशेदपुर से प्रकाशित

Email Id : aksharsamvadakhbar@gmail.com | 9546772436

25 विद्यालयों के चयनित 750... पेज 4

समय, स्थिति, देश और दुनिया सभी भारत के साथ

पाकिस्तान का नक्शा बदलने का अनुकूल समय

अरविंद

टू नेशन थ्योरी यानी एक आतंकवादी सोच, जिसके आधार पर पाकिस्तान बना। इस आतंकवादी सोच वाले गिरोह के मुखिया थे मोहम्मद अली जिन्ना। जिन्ना गिरोह का कहना था कि इस खित्ते में हिंदू और मुसलमान एक साथ नहीं रह सकते, इसलिए मुसलमानों के लिए एक अलग देश होना चाहिए। इसके बाद बना 'नापाक पाकिस्तान'।

जब से पाकिस्तान अस्तित्व में आया है तब से वह भारत से उलझता आ रहा है। पहले चार युद्ध किए, जिसमें उसे मुंह की खानी पड़ी, और जब युद्ध से पेट नहीं भरा तो अपनी धरती पर आतंकी कैंप स्थापित कर दिए। बेरोजगार और अनपढ़ बच्चों का माइंड वॉश करके कैंपों में भर्ती की जाने लगी, यानी उन्हें आतंकवादी बनाया जाने लगा। धीरे-धीरे सैकड़ों की संख्या में आतंकवादी कैंप स्थापित हो गए। इन्हीं कैंपों से ट्रेनिंग लेकर निकले आतंकवादियों से भारत में आतंकवादी हमले करवाए जाते हैं।

पाकिस्तान के इन आतंकी हमलों का भारत आज तक सामना कर रहा है। बहरहाल, समय गुजरता रहा और आतंकी हमलों की फेहरिस्त लंबी होती रही। पहलगाम में तो इसकी इंतेहा हो गई। इसके बाद शुरू हुआ 'ऑपरेशन सिंदूर', जिसके तहत भारतीय सेना ने पाकिस्तान के आतंकी सोच को कुचलने के लिए अभूतपूर्व हमला किया।

सबसे अच्छी बात यह है कि इस बार पूरी दुनिया भारत के पक्ष में खड़ी है सिर्फ तुर्की और अजरबैजान को छोड़कर। पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद उसका सबसे बड़ा सहयोगी चीन भी इस बार खुलकर समर्थन नहीं कर पा रहा है। अब ऐसे में भारत के शीर्ष नेतृत्व के द्वारा बिहार में बोले गए आदर्श वाक्य 'आतंकियों को मिट्टी में मिला देंगे' की सार्थकता सिद्ध कर देनी चाहिए, क्योंकि दुश्मन का समूलनाश करने का ऐसा अनुकूल समय कम मिलता है। इस बार की जंग में भारत की भौगोलिक स्थिति 1947 से पहले वाली होनी चाहिए, जिसके लिए राष्ट्र की आत्मा तड़प रही है। आखिरकार हम कब तक अपने लोगों की लाशें अपने हाथों से उठाते रहेंगे।

भारतीय वायु सेना के हमले में आतंकियों का मरकज सुभानअल्लाह तबाह।

आतंकवादियों के जनाजे को राजकीय सम्मान देते पाकिस्तानी सेना के अधिकारी, राजनेता और आतंकवादी समूह।

पाकिस्तान के द्वारा थोपे गए चार युद्ध

कश्मीर युद्ध (1947-48) : युद्ध तब शुरू हुआ जब पाकिस्तान समर्थित कबायली लड़ाके जम्मू कश्मीर में घुस आए थे, तब महाराजा हरि सिंह द्वारा भारत में विलय के बाद भारतीय सेना ने मोर्चा संभाला। युद्ध विराम के बाद कश्मीर दो हिस्सों में बंट गया।

बांग्लादेश मुक्ति युद्ध : (1971) पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तान सेना द्वारा किए जा रहे नरसंहार और दमन के चलते भारत ने बांग्लादेश के स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन किया। 16 दिसंबर 1971 को पाकिस्तानी सेना ने आत्मसमर्पण किया और बांग्लादेश एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया।

1965 का युद्ध : 5 अगस्त 1965 को पाकिस्तान ने ऑपरेशन जिब्राल्टर के तहत अपने सैनिकों को स्थानीय विद्रोही बनाकर जम्मू कश्मीर में भेजा। भारत ने जवाबी कार्यवाही की और पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया।

कारगिल युद्ध : (1999) मई से जुलाई के बीच पाकिस्तानी सैनिकों और आतंकवादियों ने कारगिल की ऊंचाइयों पर कब्जा कर लिया। यह जंग मई से जुलाई तक लड़ी गई थी। यह युद्ध 26 जुलाई1999 को भारत की जीत के साथ समाप्त हुआ।

प्रमुख आतंकवादी हमले

उरी हमला (2016) : 18 सितंबर 2016 को उरी स्थित भारतीय सेना के कैंप पर आतंकियों ने हमला किया। इसके बाद 28-29 सितंबर को भारतीय सेना ने पीओके में आतंकियों के लॉन्च पैड पर सर्जिकल स्ट्राइक की और कई आतंकियों को मार गिराया।

पुलवामा हमला (2019) : 14 फरवरी 2019 को पुलवामा में आत्मघाती हमले में 40 सीआरपीएफ जवान शहीद हुए थे। इसके जवाब में 26 फरवरी को भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान के बालाकोट में स्थित जैश-ए- मोहम्मद के ट्रेनिंग कैंप पर एयर स्ट्राइक की, जिसमें सैकड़ों आतंकवादी मारे गए।

ऑपरेशन सिंदूर : 7 मई 2025 को भारत ने पाकिस्तान के पंजाब और पीओके में नौ आतंकी ठिकानों पर मिसाइल हमले किए, जिसमें सैकड़ों आतंकवादी मारे गए।

सारी स्थितियां भारत के पक्ष में
वजह : जम्मू कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को 26 निर्दोष भारतीयों की आतंकवादियों द्वारा निर्मम हत्या।

देश की वर्तमान स्थिति :
आर्थिक व सामरिक रूप से मजबूत। पाकिस्तान और चीन से एक साथ लड़ने की क्षमता।

- **समर्थन :** इजराइल सहित पूरी दुनिया का अभूतपूर्व समर्थन।
- **देश के अंदर की स्थिति :** राजनीतिक रूप से पक्ष-विपक्ष सहित भारत की 140 करोड़ जनता की एक ही आवाज : पाकिस्तान का वजूद समाप्त होना चाहिए।

लक्ष्य : आतंकवाद का समूलनाश और पाकिस्तान का भूगोल बदल कर भारत में मिला लेना।

पाकिस्तान की वर्तमान स्थिति

पाकिस्तान की वर्तमान आर्थिक स्थिति काफी कमजोर है। भारी विदेशी कर्ज, बढ़ती मुद्रास्फीति और राजनीतिक अस्थिरता ने इसकी अर्थव्यवस्था को कमजोर कर दिया है। प्रमुख विपक्षी नेता इमरान खान जेल में बंद हैं। चुनाव में फर्जीवाड़ा करवाकर सेना ने शहवाज शरीफ के नेतृत्व में कठपुतली सरकार बनवा दी है। पाकिस्तान की आवाम, कठपुतली सरकार और सेना दोनों से नाराज है। सेना के अंदर बगावत का माहौल है। सरकार और सेना, दोनों को जनता का समर्थन नहीं के बराबर है।

पाकिस्तान के अंदर कई देशों की मांग

सिंध में सिंधु देश की मांग, बलूचिस्तान में बलूचिस्तान की आजादी और खैबर पख्तूनख्वा में पश्तून देश की मांग हो रही है। पीओके के लोग हर वक्त भारत में मिलने की मांग करते रहते हैं। पड़ोसी अफगानिस्तान से भी रिश्ते काफी खराब हो चुके हैं। टीटीपी (तहरीक-ए- तालिबान पाकिस्तान) के लड़ाके, जिन्हें अफगानिस्तान की तालिबान सरकार का समर्थन हासिल है, बलूच आर्मी के साथ मिलकर पाकिस्तानी सेना के खिलाफ युद्ध छेड़े हुए हैं।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी पहचान पत्र रोहिंग्या के लिए मददगार नहीं हो सकते

रोहिंग्या विदेशी हैं तो उन्हें निर्वासित किया जाना चाहिए : सुप्रीम कोर्ट

अक्षर संवाद

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि यदि देश में रह रहे रोहिंग्या शरणार्थी भारतीय

कानून के तहत विदेशी पाए गए तो उन्हें निर्वासित किया जाएगा। न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति कोटिश्वर सिंह की पीठ ने शीर्ष अदालत के एक आदेश का जिक्र करते हुए कहा कि शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त द्वारा जारी पहचान पत्र कानून के तहत उनके लिए कोई मददगार नहीं हो सकते। न्यायमूर्ति दत्ता ने राहत का अनुरोध कर रहे विभिन्न रोहिंग्या याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कोलिन गोंजाल्विस और अधिवक्ता प्रशांत भूषण से कहा यदि वे विदेशी अधिनियम के अनुसार विदेशी हैं तो उन्हें निर्वासित किया जाना चाहिए।

जागरूकता की कमी के कारण झारखंड में डायन प्रथा को रोकने का प्रयास सफल नहीं हो पा रहा

अंधविश्वास : डायन के शक में विधवा की हत्या

अक्षर संवाद • चतरा

झारखंड सरकार ने डायन बिसाही के मामलों को रोकने के लिए कई जागरूकता अभियान चलाए हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी इस पर काम करने की जरूरत है। सरकार ने इसके खिलाफ कड़े कानून बनाए हैं लेकिन जागरूकता की कमी और अंधविश्वास के कारण यह प्रयास पूरी तरह सफल नहीं हो पा रहे हैं।

पिछले दिनों चतरा जिले के कुंडा थाना क्षेत्र के चिलोई गांव स्थित बरवाटोला में कुंती देवी नाम की एक विधवा औरत को डायन बिसाही बता कर हत्या कर दी गई और उसके शव को गांव से तकरीबन 3 किलोमीटर दूर चरगिदवा जंगल में फेंक दिया गया। मृतका के भाई जगदीश गंझू ने हत्या का आरोप बहन के गोतिया पर लगाया है। उन्होंने बताया कि उनकी बहन गांव की महिलाओं के साथ जलावन की लकड़ी लाने जंगल गई थी, जब वह जंगल से लकड़ी लेकर लौट रही थी तब उनके साथ आ रही गांव की महिलाएं आगे बढ़ गईं। इसी बीच घात लगाकर बैठे हत्यारों ने टांगी से वार कर उसकी हत्या कर दी। इसके बाद उसको जंगल में फेंक दिया। मृतका कुंती देवी की दो बेटियां हैं। 2 वर्ष पूर्व ही उसके पति नारायण गंझू की बीमारी के कारण मौत हो गई थी।

डायन-बिसाही के मामलों को रोकने के लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए

शिक्षा और जागरूकता अभियान : ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने और लोगों को अंधविश्वास के खतरों के बारे में जागरूक करने की जरूरत है।

कानूनी सख्ती : दोषियों को त्वरित सजा दिलाने के लिए कानून को और सख्त करना चाहिए।

समाज की भागीदारी : पंचायत स्तर पर जागरूकता फैलाने और अंधविश्वास को खत्म करने के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे।

सामाजिक सहयोग : समाज के हर वर्ग को इस मुद्दे पर खुलकर चर्चा करनी चाहिए और इसे समाप्त करने की दिशा में एकजुट होना चाहिए।

इधर, खूंटी में डायन-बिसाही के शक में महिला की हत्या

झारखंड के खूंटी जिले में डायन-बिसाही के शक में एक महिला की बेरहमी से हत्या कर दी गयी। आरोपियों ने अपने घर में सो रही महिला पर धारदार हथियार से वार किया और उसके टुकड़े कर दिए। खूंटी जिले के पतराडीह गांव की 40 वर्षीया महिला बुधनी हुन्नी पूर्ति की उसके पड़ोस के एतवा उर्फ लौर सिंह उर्फ बट्टू ने अपने तीन साथियों के साथ मिलकर हत्या कर दी थी। पुलिस ने आरोपी एतवा को उसके अन्य तीन आरोपी दोस्तों के साथ गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। इसकी जानकारी एसडीपीओ वरूण रजक ने प्रेस कांफ्रेंस कर दी।

कनाडा से रिश्ते अच्छे होने के आसार बढ़े

भारत से रिश्ते सुधारना मार्क कार्नी की प्राथमिकता में शामिल

अक्षर संवाद

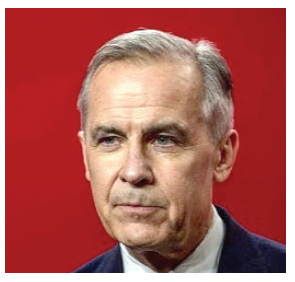

भारत और कनाडा के रिश्ते पहले काफी अच्छे रहे हैं, लेकिन साल 2023 में खालिस्तान समर्थक हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के बाद दोनों देशों के रिश्ते खराब होते चले गए। तत्कालीन प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने कनाडा की संसद में आरोप लगाया था कि निज्जर की हत्या में भारतीय एजेंटों का हाथ है। भारत ने इन आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया था और दावा किया था कि कनाडा खालिस्तान समर्थक तत्वों को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहा है।

दरअसल भारत और कनाडा के संबंधों में आई कड़वाहट का कारण खालिस्तान समर्थकों की गतिविधियां ही रही हैं, लेकिन अब नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने जिस तरह के संकेत दिए हैं उससे भारत के साथ कनाडा के रिश्तों के दोबारा पटरी पर आने के आसार बढ़ गए हैं। भारत- कनाडा संबंधों के जानकारों का कहना है कि कार्नी अर्थशास्त्री और बैंकर रहे हैं।

वे व्यावहारिक भी हैं। दूसरी तरफ डोनाल्ड ट्रंप की शुल्क नीति की वजह से पूरी दुनिया में व्यापार युद्ध का माहौल है, तो कार्नी भारत के साथ अपने कदमों को सोच-समझकर उठाएंगे। पिछले दिनों अपने चुनावी कार्यक्रम से समय निकालकर रामनवमी उत्सव में शामिल होना बताता है कि भारत से रिश्ते सुधारना उनकी प्राथमिकता में शामिल है।

सुप्रीम कोर्ट नाराज

झारखंड हाई कोर्ट ने 67 आपराधिक अपीलों पर फैसला नहीं सुनाया

अक्षर संवाद

सर्वोच्च न्यायालय ने झारखंड उच्च न्यायालय के द्वारा फैसला सुरक्षित रखने के बाद 67 आपराधिक मामलों पर फैसला नहीं देने पर नाराजगी जाहिर की है। 4 मई को सुनवाई के दौरान सर्वोच्च न्यायालय ने देश के सभी उच्च न्यायालयों को उन मामलों पर एक महीने में रिपोर्ट देने को कहा है जिनमें फैसला लंबित हैं। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस एन. कोटेश्वर सिंह की खंडपीठ ने इस घटनाक्रम को चिंतित करने वाला बताया और कहा कि वह इस मुद्दे पर कुछ अनिवार्य दिशा निर्देश बनाएंगे। पीठ ने कहा- ऐसा होने की अनुमति नहीं दी जा सकती।साथ ही सभी उच्च न्यायालयों से चार सप्ताह में उन मामलों पर रिपोर्ट मांगी है जिनमें 13 जनवरी 2025 या उससे पहले फैसला सुरक्षित रखा गया है, लेकिन आज तक फैसला नहीं सुनाया गया। सुप्रीम कोर्ट ने झारखंड हाई कोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल द्वारा दायर रिपोर्ट पर गौर करने के बाद यह निर्देश पारित किया, जिसमें कहा गया है कि जनवरी 2022 से दिसंबर 2024 तक खंडपीठ द्वारा सुनी गई 56 आपराधिक अपीलों में आदेश सुरक्षित रखे जाने के बावजूद फैसला नहीं सुनाया गया है। पीठ ने यह भी उल्लेख किया कि एकल पीठ के न्यायाधीश के समक्ष आदेश सुरक्षित रखे जाने के बावजूद 11 आपराधिक अपीलों में निर्णय नहीं सुनाया गया है। मालूम हो कि शीर्ष अदालत आजीवन कारावास की सजा काट रहे ऐसे दो दोषियों की याचिका पर सुनवाई कर रही थी जिन्हें झारखंड उच्च न्यायालय ने 2022 में दोषसिद्धि के खिलाफ उनकी अपील पर फैसला सुरक्षित रख लिया था, लेकिन फैसला नहीं सुनाया।

बुद्ध पुर्णिमा पर विशेष • बुद्ध ने संसार में सबसे पहला धर्म स्थापित किया जो मनुष्य मात्र के लिए था

बुद्ध ने कहा था; मनुष्य वस्तुत-विचारों का पुंज है

सूरज पाण्डेय

बुद्ध ने आध्यात्मिक आवश्यकता को सर्वोपरि माना जिसके आधार पर उन्हें ऐसी शक्तियां प्राप्त हुईं, जिसके द्वारा वे सामान्य व्यक्तियों की श्रेणी से उपर उठकर ईश्वर तुल्य बन गए। मनुष्य वस्तुतः विचारों का पुंज हैं। उसके दृष्टिकोण के आधार पर ही उसके बाहरी स्वरूप व आंतरिक स्वरूप का निर्माण होता है।आस्थाएं एवं मान्यताएं यदि सही बनती चली जाएं तो परिस्थितियां कैसी भी हों मानवीय उत्कर्ष का विकास होकर ही रहता है,यह एक सुनिश्चित तथ्य है।

जीवन एक चुनौती है, एक संग्राम है,इसे इसी रूप में स्वीकारने के अतिरिक्त हमारे पास कोई चारा नहीं हैं।अच्छा हो हम जीवन को इसी रूप में अंगीकार कर एक कलाकार की भांति जिएं।हँसती-हँसाती, हल्की-फुल्की जिंदगी जीते हुए औरों को अधिकाधिक सुख बांटते चलें। दुखों को,कष्टों को, तप मानकर सहन करें, साथ ही अपना सौभाग्य मानें।जीवन जीने की यह सही रीति एवं नीति हैं। बुद्ध ने संसार में सबसे पहला विश्व धर्म स्थापित किया, जो मनुष्य मात्र के लिए था। सब प्रकार के ढोंग और अंधविश्वासों को हटाकर बुद्धि विवेक और प्रेम के आधार पर सरल और पवित्र जीवन निर्वाह का आदेश दिया । वे पंडितों की भाषा छोड़कर सर्वसाधारण भाषा में उपदेश देने लगे। शिक्षित, अशिक्षित, धनी और निर्धन सबके लिए उनकी वाणी तीर्थ बन गई।

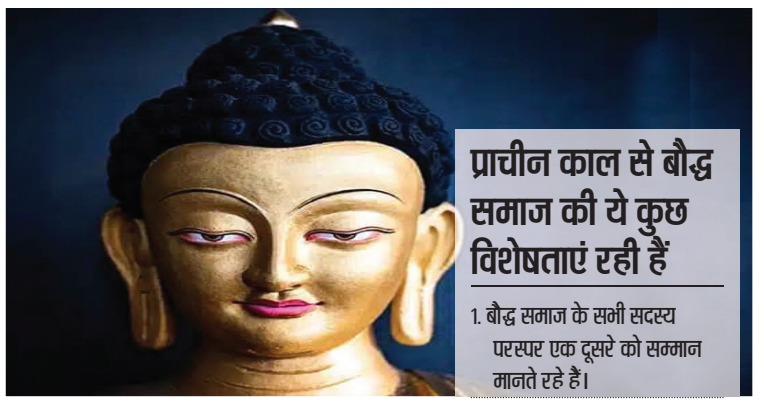

प्राचीन काल से बौद्ध समाज की ये कुछ विशेषताएं रही हैं

1. बौद्ध समाज के सभी सदस्य परस्पर एक दूसरे को सम्मान मानते रहे हैं।
2. बौद्ध समाज के सभी सदस्यों को शिक्षा प्राप्त करने की समान स्वतंत्रता रही है।
3. बौद्ध समाज के सभी सदस्यों को कोई भी पेशा कर सकने की स्वतंत्रता रही है।
4. बौद्ध समाज की स्त्रियों को पुरुषों के समान ही अधिकार रहे हैं।

नालसा की सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका

अधिक उम्र और असाध्य रोग से ग्रस्त कैदियों की जमानत का अनुरोध

अक्षर संवाद • राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) की एक याचिका पर गौर करते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने 18 राज्यों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। याचिका में कहा गया है कि 70 वर्ष की उम्र पार कर चुके ऐसे बुजुर्ग कैदी जिन्हें देखभाल की जरूरत है, और जो जमानत से इनकार करने को चुनौती देने के लिए शीर्ष अदालत पहुंचने में असमर्थ होते हैं, उन्हें जमानत पर रिहा किया जाए। नालसा के मुताबिक 31 दिसंबर 2022 तक देश की जेलों में कैदियों की संख्या 131प्रतिशत थी, जिससे बुनियादी ढांचे पर गंभीर दबाव पड़ा और जेल के भीतर चिकित्सा देखभाल और सम्मानजनक रहने की स्थिति की गुणवत्ता प्रभावित हुई।

नालसा क्या है?

नालसा एक वैधानिक निकाय है, जिसकी स्थापना विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम 1987 के तहत, समाज के कमजोर वर्गों को मुफ्त और सक्षम कानूनी सेवाएं प्रदान करने के लिए की गई है। यह विवादों के सौहार्दपूर्ण समाधान के लिए लोक अदालतों का भी आयोजन करता है।

कोल्हान प्रमंडल का सबसे बड़ा सरकारी अस्पताल, एमजीएम मेडिकल कॉलेज व अस्पताल, जिसे व्यवस्थापकों ने कसाईघर में तब्दील कर दिया

हठधर्मिता, निष्ठुरता और नाकारापन का शिकार / मैं एमजीएम अस्पताल हूं

अमिताभ वर्मा • जमशेदपुर

3 मई, दिन शनिवार, स्थान- झारखंड राज्य की आर्थिक राजधानी जमशेदपुर स्थित कोल्हान का सबसे बड़ा सरकारी अस्पताल एमजीएम मेडिकल कॉलेज व अस्पताल, दिन के तकरीबन 3:00 बजे थे, सभी मरीज दोपहर का भोजन और दवा खाकर बिस्तर पर लेटे हुए थे, तभी मेडिसिन वार्ड के बी ब्लॉक के तीसरे तल्ले की छत अचानक भरभराकर गिरने लगी। तीसरे तल्ले की छत दूसरे तल्ले को तोड़ते हुए प्रथम तल पर आ गिरी। मरीज कुछ समझ पाते इससे पहले ही बहुत बड़ा हादसा हो गया।

मरीजों को भागने का मौका ही नहीं मिला। चारों तरफ चीख पुकार मच गई। दर्जनों मरीज छत के मलवे में दब गए, जिसमें तीन मरीजों की मौत हो गई और दर्जनों घायल हो गए। इस हादसे में सरायकेला निवासी श्रीचंद तांती उम्र- 65 वर्ष, डेविड जॉनसन निवासी साकची, जमशेदपुर उम्र- 73 वर्ष और जमशेदपुर के गदड़ा निवासी लुका साइमन तिर्की उम्र- 61 वर्ष की जान चली गई। इस हादसे में गंभीर रूप से घायल मरीजों का शहर के एक प्राइवेट अस्पताल में इलाज कराया गया। घटना के बाद अमूमन जैसा होता है कि शासन-प्रशासन के लोग सक्रिय हो जाते हैं तो यहां भी जिला प्रशासन के साथ सूबे के स्वास्थ्य मंत्री ने उपस्थिति दर्ज करा दी। आनन फानन में जिला प्रशासन के द्वारा जांच टीम की घोषणा कर दी गई।

स्वास्थ्य मंत्री के द्वारा भी बोला गया की जांच में जो लोग दोषी पाए जाएंगे उन्हें बख्सा नहीं जाएगा। ध्यातव्य हो कि कुछ दिनों पहले ही मंत्री जी का जमशेदपुर दौरा हुआ था और उन्होंने एमजीएम मेडिकल कॉलेज व अस्पताल को लेकर कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए थे। बहरहाल जांच टीम गठित हो गई है। जांच में क्या निकलेगा यह सबको मालूम है! आदतन लीपापोती होगी। हो सकता है एक दो लोग नप भी जाएं लेकिन असल गुनहगार हर बार की तरह इस बार भी बेदाग ही रहेंगे।

एमजीएम मेडिसिन वार्ड की छत क्यों गिरी?

दरअसल जिस भवन (मेडिसिन वार्ड) के कॉरिडोर की छत गिरी वह काफी जर्जर हो चुका है। वहां अक्सर प्लास्टर गिरने की घटना होती रहती है। मरीज जब इसकी शिकायत अस्पताल प्रबंधन से करते हैं तो अस्पताल प्रबंधन हमेशा की तरह टाल मटोल का रवैया अपनाता है। जिस मेडिसिन वार्ड के जर्जर भवन की स्थिति को देखकर रूह कांप जाती है उसी में मरीजों का इलाज किया जा रहा है। मालूम हो कि जिस मेडिसिन वार्ड के कॉरिडोर की छत गिरी है उसका निर्माण सन् 1960 में हुआ था। विडंबना देखिए कि 3 वर्ष पूर्व ही भवन निर्माण विभाग के द्वारा तकरीबन 30 लाख रुपए खर्च कर इसकी मरम्मत कराई गई थी।हकीकत यह है कि मरम्मत के नाम पर सिर्फ मरम्मत का एहसास कराया गया। अगर मरम्मत ठीक से होती तो निश्चित ही ऐसा हादसा नहीं होता।

500 करोड़ रुपए से बने नए अस्पताल में क्यों नहीं हो पा रही शिफ्टिंग?

इस घटनाक्रम की तह तक जाने से पहले व्यवस्थापकों के द्वारा शिफ्टिंग के लिए की गई कवायद और उनके द्वारा दिए गए वक्तव्यों को जानना बहुत जरूरी है। **तारीख -20-12-2024**, स्वास्थ्य विभाग के प्रधान सचिव अजय कुमार सिंह के नेतृत्व में 10 सदस्यीय विशेष टीम ने डिमना स्थित एमजीएम मेडिकल कॉलेज परिसर में बने नए अस्पताल भवन का निरीक्षण किया था। उनके द्वारा ओपीडी सुविधाओं की जानकारी लेने के साथ जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के साथ ढाई घंटे तक चली बैठक में नए अस्पताल भवन में मरीजों को दी जाने वाली सुविधाओं पर चर्चा हुई थी। प्रधान सचिव ने बताया था कि नए अस्पताल भवन में 750 बेड की सुविधा होगी, साथ ही कैंसर व न्यूरो ओपीडी की व्यवस्था की जाएगी। अगले 6 महीने

में कैंसर, हार्ट, न्यूरो, एंडोक्रिनोलॉजी, नेफ्रोलॉजी, यूरोलॉजी, दर्द और उपशामक देखभाल, ऑर्थोप्लास्टी, गैस्ट्रोमेडिसिन, फिजिकल मेडिसिन एंड रिहैलिबिटेशन, पिडियाट्रिक सर्जरी और गैस्ट्रो सर्जरी के विभागों में ओपीडी व इंडोर सेवाएं शुरू की जाएंगी, साथ ही अस्पताल की व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए तीन हॉस्पिटल मैनेजर रखे जाएंगे।

तारीख-30-12-2024

स्वास्थ्य विभाग के प्रधान सचिव अजय कुमार सिंह ने बताया था कि एमजीएम अस्पताल को मॉडर्न बनाने के लिए 15 जनवरी 2025 से हार्ट, न्यूरो और कैंसर सुपर स्पेशियलिटी सुविधा शुरू हो जाएगी। इसीके तहत लेटेस्ट उपकरण खरीदे जा रहे हैं, एमजीएम में कुल 12 स्पेशियलिटी विभाग खुलने हैं, इसके लिए अलग से 72 एक्सपर्ट डॉक्टर के पद स्वीकृत करने की प्रक्रिया चल रही है।

तारीख-05-01-2025

अस्पताल के विभागाध्यक्षों ने अस्पताल अधीक्षक व कॉलेज के प्रिंसिपल को शिफ्टिंग पर रोक लगाने का सुझाव दिया। रोकने का कारण कॉलेज परिसर में बने नए अस्पताल में बुनियादी सुविधाओं का अभाव बताया गया। चूंकि विभागीय सचिव ने 31 जनवरी 2025 तक नए अस्पताल में शिफ्टिंग का आदेश दिया था इसलिए अस्पताल प्रबंधन ने दो-तीन विभागों के आंशिक हिस्से को शिफ्ट कर इति श्री कर ली। विभागाध्यक्षों ने शिफ्टिंग नहीं करने का जो कारण बताया उनमें-पानी की समुचित व्यवस्था न होना प्रमुख कारण है। चिकित्सा विभाग के विशेषज्ञों का कहना है कि डीप बोरिंग के पानी से डायलिसिस व पैथोलॉजी विभाग की मशीनें नहीं चलेंगी, इसके लिए फ़िल्टर पानी चाहिए जो नए अस्पताल भवन में नहीं है।

लटकाने भटकाने का गंदा खेल

नए अस्पताल भवन का उद्घाटन सन् 2024 में ही हो गया लेकिन आज तक शिफ्टिंग नहीं हो पाई है, जबकि स्वास्थ्य सचिव और स्वास्थ्य मंत्री दोनों ने अविलंब शिफ्टिंग का आदेश दिया है, लेकिन अस्पताल प्रबंधन ने कभी पानी की कमी तो कभी संसाधनों की कमी का बहाना बनाकर आदेश को दरकिनार कर दिया। परिणाम यह हुआ की जर्जर भवन में ही आज तक मरीजों का इलाज हो रहा है। अगर शिफ्टिंग हो गई रहती तो ऐसा हृदय विदारक हादसा देखने को नहीं मिलता।

एमजीएम अस्पताल के जर्जर भवन के गिरने की घटना स्वास्थ्य विभाग की सरासर लापरवाही वह नाकामी का नतीजा है। पूर्व स्वास्थ्य मंत्री से लेकर वर्तमान स्वास्थ्य मंत्री का लगातार दौरा होता रहा। पूर्वी सिंहभूम के उपायुक्त ने एक एडीएम को एमजीएम अस्पताल के सुधार का जिम्मा भी दिया था लेकिन आज तक कोई सुधार नहीं हुआ। नतीजा यह हुआ कि जर्जर मेडिसिन कॉरिडोर की छत गिर गई और निहायत ही गरीब तीन मरीज छत के मलवे में दबकर मर गए। उन्होंने कहा कि इस दुर्घटना के लिए जिला प्रशासन और राज्य सरकार दोनों पूर्णतया दोषी हैं।

सरयू राय, विधायक जमशेदपुर पश्चिमी

पुनश्च

किसी भी समाज, देश या राज्य को विकसित तभी कहा जाता है जब वहां शिक्षा और चिकित्सा का स्तर ऊंचा हो, आवागमन के लिए अच्छी सड़के हों और बेरोजगारों की कतार छोटी हो। झारखंड में इन उद्देश्यों की राह दुरूह दिखती है। हम झारखंड के नीति निर्धारकों को बताना चाहते हैं कि उनकी करनी ने अस्पताल तो क्या पूरी व्यवस्था को बीमार बना दिया है और एक बीमार व्यवस्था कभी भी विकास का पर्याय नहीं बन सकती।

पूर्वी सिंहभूम के चाकुलिया में जन्म प्रमाण पत्र का फर्जीवाड़ा

संवाद ब्यूरो • चाकुलिया

झारखंड के पूर्वी सिंहभूम जिला अंतर्गत चाकुलिया प्रखंड के मटियाबांधी पंचायत से हजारों की संख्या में फर्जी जन्म प्रमाण पत्र बनाने का मामला सामने आने के बाद प्रशासन में हड़कंप मचा हुआ है। आरोप है कि फर्जी जन्म प्रमाण पत्र बनाने में पंचायत सचिव सुनील महतो और बीएलई(कंप्यूटर ऑपरेटर) सपन महतो की मुख्य भूमिका है। मामले की गंभीरता को देखते हुए प्रखंड विकास पदाधिकारी आरती मुंडा के बयान पर मटियाबांधी के पंचायत सचिव सुनील महतो और बीएलई(कंप्यूटर ऑपरेटर) सपन महतो के खिलाफ नामजद प्राथमिकी की दर्ज कर हिरासत में ले लिया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस के द्वारा सघन जांच की जा रही है। जानकारी के मुताबिक इस मामले में और भी गिरफ्तारियों की संभावना व्यक्त की जा रही है।

किन्नरों का भी बना दिया फर्जी जन्म प्रमाण पत्र

जानकारी के अनुसार आरोपित पंचायत सचिव सुनील महतो व बीएलई (कंप्यूटर ऑपरेटर) सपन महतो ने दर्जनों किन्नरों का भी फर्जी जन्म प्रमाण पत्र बना दिया, जबकि सरकारी आंकड़ों के अनुसार यहां एक भी किन्नर नहीं रहता है।

अहिल्याबाई होल्कर का ३००वीं जयंती समारोह

संवाद ब्यूरो • जमशेदपुर

चार मई को जमशेदपुर स्थित मोतीलाल नेहरू पब्लिक स्कूल के मदन मोहन मालवीय पेक्षागृह में अहिल्याबाई होलकर की ३००वीं जयंती समारोह आयोजित किया गया। 'स्त्री राष्ट्र की आधार शक्ति' संस्था के द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन साहित्य अकादमी मध्य प्रदेश के निदेशक डॉ विकास दवे, समाज सेविका सह अध्यक्ष संगीता बेहरा व न्यास के सदस्यों के द्वारा किया गया। आयोजित समारोह के मुख्य वक्ता डॉ विकास दवे ने कहा कि दृढ़ संकल्प और तपस्या की भावना हो तो हर नारी अहिल्याबाई बन सकती है। आयोजित कार्यक्रम में छात्राओं के द्वारा समाज में महिलाओं की भूमिका पर आधारित नाटक भी प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

नक्सल विरोधी अभियान के तहत भारी मात्रा में सामान बरामद

संवाद ब्यूरो • पलामू

झारखंड पुलिस के द्वारा नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में लगातार अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में पिछले दिनों पलामू जिले में पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन टीएसपीसी के जोनल कमांडर शशिकांत (10 लाख का इनामी) अपने दस्ता सदस्यों नगीना, गौतम, मुखदेव एवं अन्य के साथ तरहसी थाना अंतर्गत ग्राम सिंजो एवं महुवरी के जंगल में किसी बड़ी घटना को अंजाम देने की योजना बना रहे हैं लिहाजा उक्त सूचना के आधार पर पुलिस टीम का गठन किया गया। गठित पुलिस टीम जब सिंजो महुवरी के जंगल क्षेत्र में पहुंची तो उग्रवादियों ने पुलिस बल पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं। पुलिस द्वारा बार-बार आत्मसमर्पण के लिए चेतावनी देने के बावजूद उग्रवादियों ने लक्षित गोलीबारी जारी रखी। उग्रवादियों द्वारा जारी गोलाबारी का पुलिस के द्वारा भी साहसपूर्ण जवाब दिया गया। लिहाजा पुलिसिया कार्रवाई को भारी पड़ता देख उग्रवादी घने जंगलों की तरफ पहाड़ों का लाभ उठाकर भाग गए। उसके बाद पुलिस के द्वारा सघन अभियान चलाया गया जिसमें भारी मात्रा में सामान बरामद हुआ।

विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस पर जिला जनसम्पर्क कार्यालय में कार्यशाला का आयोजन

संवाद ब्यूरो • जमशेदपुर

विश्व प्रेस स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर जिला जनसम्पर्क कार्यालय सभागार में कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिला सूचना एवं जनसंपर्क विभाग तथा प्रेस क्लब ऑफ जमशेदपुर के संयुक्त तत्वावधान में 'प्रेस स्वतंत्रता पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव' विषय पर आयोजित परिचर्चा में अतिथियों एवं पत्रकारों ने अपने विचार रखे। वरीय पुलिस अधीक्षक कौशल किशोर मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि इंसान की बुद्धिमत्ता को कभी भी एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) मात नहीं दे सकता है।

उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया न्यूज और व्यूज (ओपिनियन) देता है। इसका विकल्प एआई नहीं हो सकता, लेकिन इसकी मदद से डेटा एवं यथार्थ का उपयोग कर बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है, क्योंकि एआई की उपयोग की अपनी सीमा है और वह बनी रहनी चाहिए। सोच समझकर इसका उपयोग करने की जरूरत है। जिला जनसंपर्क पदाधिकारी पंचानन उरांव ने कहा कि सोच समझ कर एआई का उपयोग करना है, वरना इसका दुष्परिणाम होगा ।

उन्होंने यह स्पष्ट किया कि यद्यपि एआई तकनीक हमारे कार्यों को अधिक सहज, तेज और कुशल बना रही है, उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि अगर एआई का दुरुपयोग हुआ या इसे बिना नियंत्रण के अपनाया गया, तो यह न केवल व्यक्तिगत गोपनीयता के लिए खतरा बन सकता है, बल्कि सामाजिक और नैतिक मूल्यों को भी प्रभावित कर सकता है। न कि उसके विरुद्ध। उरांव ने समाज के सभी वर्गों, विशेषकर युवाओं से अपील की कि वे एआई के प्रति जागरूक रहें, इसे केवल सुविधा का साधन मानें, और इसका इस्तेमाल विवेकपूर्ण तथा नैतिक दायरे में रहकर करें। झारखंड के सभी जनजातीय समाज की कला संस्कृति विरासत का दस्तावेजीकरण कर रहे पंचानन उरांव के अनुसार एआई के मार्फत पूरा विश्व यहां की सभ्यता संस्कृति से अवगत होगा।

इस मौके पर कई पत्रकारों ने भी अपने विचारों को साझा किया। कार्यक्रम में पत्रकार श्री दशमत सोरेन द्वारा लिखी पुस्तक कविता संग्रह पूर्णिमा की शाम का विमोचन किया गया। वहीं प्रेस क्लब ऑफ़ जमशेदपुर के प्रथम महासचिव सह वरिष्ठ पत्रकार श्री सिद्धनाथ दुबे और श्री मनीष सिन्हा के निधन पर दो मिनट का मौन रख श्रद्धांजलि दी गई। कार्यकर्म में जनसपर्क विभाग से सहायक जनसम्पर्क पदाधिकारी अंकित कुमार सिंह, भविष्य शर्मा, गौरव, चन्दन, बी श्रीनिवास, संजीव भारद्वाज, गुलाब प्रसाद, बीके ओझा, बृजेश सिंह, कुलविंदर सिंह, सुमित झा, अमित तिवारी, अमिताभ वर्मा, अभिषेक पीयूष, वेद प्रकाश गुप्ता, प्रमोद झा, जितेंद्र कुमार, निखिल सिन्हा, चंद्रशेखर, सुनील आनंद, मिथिलेश चौबे, संजीव सिंह, निर्मल प्रसाद, आकाश, विकास व अन्य लोग मौजूद थे।

अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस पर रैली

चाईबासा • अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस पर पश्चिम सिंहभूम जिले के गुवा में झारखंड मजदूर संघर्ष संघ के केंद्रीय अध्यक्ष रामा पांडेय के नेतृत्व में एक रैली निकाली गई। इसी क्रम में गुवा सेल क्लब में एक जनसभा का भी आयोजन किया गया। जनसभा को संबोधित करते हुए झारखंड मजदूर संघ के केंद्रीय अध्यक्ष रामा पांडेय ने कहा कि आज हर क्षेत्र में खदान प्रबंधकों के द्वारा मजदूरों का शोषण किया जा रहा है। झारखंड मजदूर संघ इसे कभी भी बर्दाश्त नहीं करेगा। हम मजदूरों के शोषण के खिलाफ हमेशा लड़ते रहे हैं और आगे भी लड़ते रहेंगे। इसके लिए सेल का चक्का जाम भी करना पड़े तो करेंगे। हर हाल में मजदूरों को न्याय दिलाकर रहेंगे।

व्यवस्था की नाकामी और जुल्म की इंतेहा

बंधक बनाए गए झारखंड के मजदूरों को अहमदाबाद पुलिस ने मुक्त कराया

संवाद ब्यूरो • चाईबासा

जगन्नाथपुर थाना क्षेत्र के मोंगरा गांव से शुरू हुई एक दर्दनाक कहानी आखिरकार राहत की खबर लेकर आई । गुजरात के अहमदाबाद की बेसन फैक्ट्री में बंधक बनाए गए सभी 9 ग्रामीण मजदूरों को प्रशासनिक कार्रवाई के बाद मुक्त करा लिया गया। स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ता, दिल बहादुर थापा की सूचना और पीड़ित परिवारों की गुहार पर सक्रिय हुए जिला प्रशासन ने गुजरात पुलिस के सहयोग से अहमदाबाद की उस फैक्ट्री पर छापा मारा, जहां झारखंड के ये मजदूर पांच महीनों से बंधक बनाए गए थे।

बंधुआ मजदूरी, पहचान दस्तावेजों की जब्ती और मानसिक उत्पीड़न जैसी गंभीर स्थितियों में फंसे इन सभी मजदूरों को रिहा कर उनके मूल गांव वापस भेजा गया। रिहाई की खबर मिलते ही बड़ाजामदा के प्लॉटसाई गांव में खुशी की लहर दौड़ गई। मजदूरों के परिजनों की आंखों में आंसू थे, पर इस बार राहत के। रीना गोप की बेटी ने कहा, हमें लगने लगा था कि मां-पापा कभी नहीं लौटेंगे, लेकिन ईश्वर की कृपा से वे सुरक्षित वापस आ गए। हालांकि, परिजनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अब इस पूरे नेटवर्क का पर्दाफाश कर दोषियों को कड़ी सजा देने की मांग तेज कर दी है। जिला प्रशासन ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में मानव तस्करी से जुड़े गिरोहों की निगरानी के लिए विशेष जांच टीम गठित करने का फैसला लिया है।

बीडीओ स्तर पर पंचायतों को निर्देश दिया गया है कि वे रोजगार देने के नाम पर बाहर ले जाने वालों की पृष्ठभूमि की जांच कराएं। रिहा हुए मजदूरों ने लौटने के बाद जो कहानी सुनाई वह रोंगटे खड़े कर देने वाली थी। मजदूरों ने बताया, हमें एक कमरे में बंद कर दिया गया था। खाना भी तय समय पर नहीं मिलता था और मजदूरी तो कभी मिली ही नहीं। हमने कई बार निकलने की कोशिश की लेकिन पहचान पत्र नहीं होने के कारण डरते थे। उन्होंने बताया, हमसे सुबह से रात तक बेसन की बोरियां भरवायी जाती थीं, बिना आराम, बिना दवा। औरतें भी सुरक्षित नहीं थीं। गांव के मुखिया प्रतिनिधि और स्थानीय समाजसेवियों ने इस घटना को 'सिस्टम की नाकामी' बताया। उन्होंने कहा कि जब तक रोजगार के बेहतर अवसर गांवों में नहीं मिलते, ऐसी घटनाएं होती रहेंगी। इसके लिए सरकार को स्थायी समाधान की दिशा में ठोस नीति बनानी होगी। विधिक सेवा प्राधिकरण के एक प्रतिनिधि ने कहा कि पीड़ितों को न सिर्फ कानूनी सुरक्षा बल्कि आर्थिक सहायता और पुनर्वास की भी जरूरत है। "ये सिर्फ केस फाइल करने का मामला नहीं है, बल्कि टूटे हुए भरोसे को फिर से जोड़ने का प्रयास होना चाहिए'।

'कविता के नए प्रतिमान' लिखने वाले डॉ. नामवर सिंह कई दशकों तक खुद हिंदी साहित्य के प्रतिमान बने रहे

प्रेरणास्त्रोत : मंगलेश डबराल के शब्दों में हिंदी के नामवर

जेएनयू के हिंदी विभाग की धाक काफी समय तक बनी रहने का श्रेय नामवर जी को ही जाता है, जिन्होंने विभाग की बुनियाद भी रखी थी

अक्षर संवाद

आधुनिक कविता की व्यावहारिक आलोचना की सबसे अधिक लोकप्रिय किताब 'कविता के नए प्रतिमान' लिखने वाले डॉ. नामवर सिंह कई दशकों तक खुद हिंदी साहित्य के प्रतिमान बने रहे। वे हिंदी के उन चंद कृति व्यक्तियों में से थे जिनके पास न सिर्फ हिंदी, बल्कि भारतीय भाषाओं के साहित्य की एक विहंगम और समग्र दृष्टि थी और इसीलिए दूसरी भाषाओं में हिंदी के जिस पहले व्यक्ति को सबसे ज्यादा याद किया जाता रहा, वे नामवर सिंह ही हैं। प्रगतिशील-प्रतिबद्ध साहित्य का एजेंडा तय करने का काम हो या 'आलोचना'के संपादक के तौर पर साहित्यिक वैचारिकता का पक्ष या जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में प्रोफेसरी, सब में उनका कोई जवाब नहीं था।

उनका साहित्य पढ़ने का तरीका शुष्क और किताबी नहीं, बल्कि इतना संप्रेषण और प्रभावशाली होता था कि उनके ही नहीं दूसरी कक्षाओं के छात्र और प्राध्यापक भी उन्हें सुनने आ जाते थे। जेएनयू के हिंदी विभाग की धाक काफी समय तक बनी रहने का श्रेय नामवर जी को ही जाता है जिन्होंने विभाग की बुनियाद भी रखी थी।

पांच दशक से भी ज्यादा समय तक नामवर सिंह हिंदी साहित्य की प्रस्थापनाओं, बहसों और विवादों के केंद्र में रहे। चर्चा 'दूसरा नामवर कौन? के मुद्दों पर भी हुई और कई आलोचकों-प्राध्यापकों ने नामवर जैसा बनने की कोशिश की, लेकिन उनकी तरह का दर्जा किसी को हासिल नहीं हुआ।

जेएनयू का हिंदी विभाग।

नयी कहानी में 'नयी' क्या है?

पहले भी नामवर जी की एक किताब 'कहानीः नयी कहानी' (1964) चर्चित रही जिसमें उन्होंने यह जांचने की कोशिश की, कि नई कहानी आंदोलन में नया क्या है। उन्होंने उसके प्रमुख कथाकारों मोहन राकेश, राजेंद्र यादव और कमलेश्वर की त्रयी की कहानियों के बरक्स निर्मल वर्मा की कहानी परिंदे को पहले नयी कहानी के रूप में मान्यता दी। ज्यादातर आलोचकों की राय में मोहन राकेश कि 'मलबे का मालिक' पहली नयी कहानी थी, लेकिन नामवर जी ने ऐसी कहानियों को अधूरा अनुभव कह कर खारिज किया। दरअसल वाद-विवाद उन्हें शुरू से ही प्रिय था। हालांकि उनकी एक और किताब 'वाद विवाद संवाद' बहुत बाद में (1989) में आयी। नामवर सिंह मानते थे कि मेरा वास्तविक काम 'दूसरी परंपरा की खोज' में है जिसका प्रकाशन (1982) में हुआ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल की 'लोक मंगलवादी' सैद्धांतिकी से अलग आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की 'लोकोन्मुखी क्रांतिकारी' संस्कृति समीक्षा की राह पर चलती इस किताब से उन्होंने जैसे अपने गुरु को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने तुलसीदास की बजाय, सूरदास और कबीर की प्रासंगिकता को रेखांकित किया। उसकी भूमिका में नामवर सिंह लिखते हैं: "यह प्रयास परंपरा की खोज का ही है संप्रदाय निर्माण का नहीं"। पंडित जी स्वयं संप्रदाय निर्माण के विरुद्ध थे। यदि संप्रदाय का मूल अर्थ है "गुरु- परंपरा से प्राप्त आचार- विचारों का संरक्षण', तो पंडित जी के विचारों के अवकृति संरक्षण के लिए मेरी क्या, किसी को भी आवश्यकता नहीं है।

हिंदी भाषा को हमेशा रखा आगे

नामवर सिंह व्यावहारिक आलोचना ही नहीं, कुछ व्यावहारिक विवादों के लिए भी जाने गए। एक लंबे समय तक हिंदी और उर्दू की प्रगतिशील या तरक्की पसंद धाराओं में एक जुटता और अंतर्क्रियाएं बनी रहीं। कम्युनिस्ट पार्टी के सांस्कृतिक मंचों- प्रगतिशील लेखक संघ, इंडियन पीपुल्स फ्री थिएट्रिकल संगठन (इप्टा) आदि की सांस्कृतिक गतिविधियों में हिंदी -उर्दू लेखकों, रंग कर्मियों का ऐतिहासिक योगदान था जिसकी धमक हिंदी सिनेमा तक में सुनाई दी। बाद में जब प्रगतिशील लेखक संघ में हिंदी- उर्दू के मसले पर मतभेद शुरू हुए और उर्दू लेखकों ने उपेक्षित किए जाने और उर्दू को उसका 'वाजिब हक' न मिलने की बहस शुरू की, तो नामवर जी ने एक लेख 'बासी भात में खुदा का साझा' के जरिए हिंदी का पक्ष लिया। नतीजतन उर्दू में नामवर के समक्ष कहे जाने वाले उन्हीं के साथ जवाहरलाल विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केंद्र में प्रोफेसर डॉ मोहम्मद हसन से उनकी वैचारिक व्यक्तिगत दूरियां बढ़ गईं। हिंदी और उर्दू दोनों के साहित्य पर आलोचकों का वर्चस्व रहा है और यह हमारे साहित्यों को एक औपनिवेशिक देन है, और उसके दिग्गजों के आपसी मतभेदों ने तरक्की पसंद अदब में कई भीतरी दरारें पैदा कीं।

'वाचिक' परंपरा

नामवर सिंह आलोचना में एक और परंपरा के लिए भी याद किए जाते हैं, और वह है वाचिक परंपरा। द्विवेदी जी बहुत कुछ लिखने के अलावा उस 'वाचिक' धारा के भी समर्थक थे जिसकी लीक कबीर, नानक, दादू आदि की यायावरी और प्रवचनों से बनी थी। कहानी उनकी निगाह में गल्प थी, गप्प का तत्सम रूप। नामवर जी ने भी जीवन के उत्तरार्ध में 'वाचिक' शैली में ही काम किया, जिसका कुछ उपहास भी हुआ। दूसरी परंपरा की खोज के बाद उनकी करीब एक दर्जन किताबें आईं जिनमें 'आलोचक के मुख से', 'कहना न होगा' 'कविता की जमीन और जमीन की कविता' बात-बात में बात आदि प्रमुख हैं। लेकिन वह ज्यादातर लिखी हुई नहीं बोली हुई हैं। लेकिन यह देखकर आश्चर्य होता है कि करीब 3 दशक तक वे कभी-कभार 'आलोचना' के संपादकीयों को छोड़कर बिना कुछ लिखे, सिर्फ इंटरव्यू, भाषण और व्याख्यान के जरिए प्रासंगिक बने रहे। इसकी एक वजह यह भी थी कि उनका गंभीर लेखन जिस तरह बोझिल विद्वता से मुक्त था, वैसे ही उनकी वाचिकता भी सरस थी, हालांकि उसमें वह प्रामाणिकता कम थी जो उनके लेखन में पाई जाती है

उदाहरण की तरह देखा गया नामवर का जीवन

पांच दशक से भी ज्यादा समय तक नामवर सिंह हिंदी साहित्य की प्रस्थापनाओं, बहसों और विवादों के केंद्र में रहे। चर्चा 'दूसरा नामवर कौन? के मुद्दों पर भी हुई और कई आलोचकों-प्राध्यापकों ने नामवर जैसा बनने की कोशिश की, लेकिन उनकी तरह का दर्जा किसी को हासिल नहीं हुआ। खुद नामवर कहते थे कि हर साहित्यिक दौर को अपना आलोचक पैदा करना होता है। मैं जिस पीढ़ी का आलोचक हूं उसके बाद की पीढ़ी का आलोचक नहीं हो सकता। जिन आलोचकों ने उनसे अलग राह पर चलने, उनकी परंपरा से हटकर चलने की कोशिश की और आलोचना को व्यावहारिकता से कुछ हटकर गहरी सामाजिक सरोकारों से जोड़ने की कोशिश की, वह कुछ हद तक कामयाब रहे। किसी आलोचक को इतनी प्रशस्तिपूर्ण किताबें कम ही नसीब हो पाती हैं। हिंदी में आलोचना की फिलहाल जो दुर्दशा है उसमें 'नामवर के बाद कौन' की बहस भी संभव नहीं लगती। हां, नामवर के होने का अर्थ पर काफी विचार किया गया और अब उनके विदा लेने के बाद शायद 'नामवर के न होने का अर्थ' पर उतने ही गंभीर विचार की दरकार होगी।

साहित्य में स्वीकृति की मुहर

- *एक लंबे समय तक नामवर सिंह को अध्ययन और अध्यवसाय का पर्याय माना जाता रहा। जेएनयू से पहले उन्हें बहुत से लोगों ने दिल्ली के तिमारपुर इलाके में एक कमरे के घर में देखा होगा जहां दीवार पर लातिन अमेरिकी छापामार क्रांतिकारी चे ग्वारा की काली- सफेद तस्वीर लटकती थी और वह एक तख्त पर किताबों से घिरे हुए किसी एकांत साधक की तरह रहते थे। कई लोग यह मानते हैं कि उस दौर का गहन अध्ययन जीवन भर उनके काम आता रहा। उनके संपादन में आलोचना का बहुत सम्मान था और उसमें किसी की रचना का प्रकाशित होने का अर्थ थाः साहित्य में स्वीकृति की मुहर।*
- *युवावस्था में उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय में अध्यापन किया और कम्युनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार के तौर पर लोकसभा चुनाव के मैदान में उतरे और हार गए, जिसके नतीजे में उन्हें विश्वविद्यालय की नौकरी से हटना पड़ा, फिर दिल्ली जाकर उन्होंने कुछ समय पार्टी के मुख पत्र 'जनयुग' का संपादन किया। वहां से इस्तीफा देने को विवश किए जाने के बाद जोधपुर विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग का प्रमुख बनना नामवर सिंह के जीवन का एक अहम मोड़ था।*
- *पाठ्यक्रम में प्रगतिशील : साहित्य को शामिल करने आदि कुछ मुद्दों के कारण उन्हें वहां से भी मुक्त होना पड़ा, फिर उन्हें जेएनयू में हिंदी विभाग की बुनियाद रखने का जिम्मा मिला और वह वर्षों तक उसके अध्यक्ष रहे, उसके बाद की कहानी उनकी दुनियावी कामयाबी की मिसाल है।*
- *'कविता के नए प्रतिमान' का प्रकाशन (1968)किसी परिघटना से कम नहीं था, जिसने समकालीन हिंदी कविता की आलोचना में एक प्रस्थापना परिवर्तन किया। उससे पहले तक आधुनिक, छायावादोत्तर कविता को प्रगतिशील नजरिए से पढ़ने- परखने की व्यवस्थित दृष्टि का अभाव था, और अकादमिक क्षेत्र में डॉक्टर नागेंद्र की रस सिद्धांतवादी मान्यताओं का बोलबाला था। ये मान्यताएं नयी काव्य संवेदना को देख पाने में असमर्थ थीं इसीलिए उसे खारिज करती थीं। कविता के नए प्रतिमान ने नागेंद्र की रूमानी आलोचना का जबरदस्त खंडन किया और आधुनिक काव्य भूमियों की पड़ताल के लिए पुराने औजारों को निरर्थक मानते हुए नए प्रतिमानों की जरूरत रेखांकित की।*
- *इस पद का जिक्र हालांकि सबसे पहले कवि : आलोचक विजय देवनारायण शाही ने लक्ष्मीकांत वर्मा की पुस्तक नयी कविता के प्रतिमान के संदर्भ में कहा था कि अब नयी कविता के प्रतिमानों का नहीं बल्कि कविता के नए प्रतिमानों की जरूरत है। लेकिन नामवर सिंह ने शाही के भाववाद से हटकर उन्हें एक सुव्यवस्थित शक्ल देकर समाज- सापेक्ष पड़ताल का हिस्सा बनाया।*
- *शाही परिमल ग्रुप के पुरोधा थे जिसके प्रगतिशील लेखकों से गहरे मतभेद थे। एक तरह से नामवर सिंह ने परिमलीय नयेपन को प्रगतिशील अंतर्वस्तु देने का काम किया। वह विश्व राजनीति में पूंजीवादी और समाजवादी ब्लॉक के बीच शीत युद्ध का दौर था जिसकी छाया से साहित्य भी अछूता नहीं रहा। हिंदी के शीत युद्ध में एक तरफ परिमलीय लेखक और हीरानंद सच्चिदानंद वात्सायन अज्ञेय थे तो दूसरी तरफ प्रगतिशील साहित्य का मोर्चा था जिसकी बागडोर तमाम आपसी मतभेदों के बावजूद डॉ रामविलास शर्मा और डॉ. नामवर सिंह के हाथों में रही। कविता के नये प्रतिमान इसी दौर की कृति है जिसने डॉ. नागेंद्र के साथ-साथ अज्ञेय के साहित्यिक आभामंडल को ढहाने का काम किया। नामवर जी ने अज्ञेय के नव छायावाद के बरक्स रघुवीर सहाय की कविता को, और बाद में गजानन माधव मुक्तिबोध को भी केंद्रीयता देते हुए नया विमर्श शुरू किया। रघुवीर सहाय हालांकि अज्ञेय की पाठशाला से ही निकले थे लेकिन उनके सरोकार कहीं ज्यादा सामाजिक और लोकतांत्रिक नागरिकता से जुड़े थे, इसलिए नामवर जी ने कविता की सामाजिकता और लोकतंत्र पर जिस बहस की शुरुआत की वह लंबे समय तक सार्थक बनी रही।*
- *पत्रकारिता का अनुभव होने के कारण उनकी भाषा अकादमिक जटिलता से मुक्त और ज्यादा संप्रेषनीय थी। यह किताब आलोचना को एक रणनीति के सामने रखती थी और बाद में खुद नामवर जी उसे 'पोलिमिकल' यानी दांव-पेंच और उछाड़- पछाड़ से भरी हुई मानने लगे। वर्षों बाद उन्होंने जैसे भूल- सुधार करते हुए अज्ञेय की कविता पर पुनर्विचार किया और उनके समग्र अवदान को भी रेखांकित किया।*

आम जनमानस के कवि, गजलकार-दुष्यंत कुमार

हिंदी साहित्य के महान कवि, गजलकार और उपन्यासकार दुष्यंत कुमार का जन्म उत्तर प्रदेश के बिजनौर में हुआ था। उनकी गजलें आज भी जनमानस के दिल और दिमाग को झकझोरती हैं। 42 की उम्र में उन्होंने जो हासिल किया वह साहित्य की दुनिया में बिरले लोगों को मिलता है।

कैसे मंजर सामने आने लगे हैं,
गाते- गाते लोग चिल्लाने लगे हैं।
अब तो इस तालाब का पानी बदल दो,
यह कंवल के फूल कुम्हलाने लगे हैं।
वो सलीबों के करीब आए तो हमको,
कायदे-कानून समझाने लगे हैं।
एक कब्रिस्तान में घर मिल रहा है,
जिसमें तहखानों में तहखाने लगे हैं।
मछलियों में खलबली है अब सफीने,
उस तरफ जाने से कतराने लगे हैं।
मौलवी से डांट खाकर अहले- मकतब,
फिर उसी आयत को दोहराने लगे हैं।
अब नई तहजीब के पेशे- नजर हम,
आदमी को भूनकर खाने लगे हैं।

तुम्हारे पांव के नीचे कोई जमीन नहीं,
कमाल ये है कि फिर भी तुम्हें यकीन नहीं।
मैं बेपनाह अंधेरों को सुब्ह कैसे कहूं,
मैं इन नजारों का अंधा तमाशबीन नहीं।
तेरी जुबान है झूठी जम्हूरियत की तरह,
तू एक जलील- सी गाली से बेहतरीन नहीं।
तुम्हीं से प्यार जतायें तुम्हीं को खा जाएं,
अदीब यों तो सियासी है पर कमीन नहीं।
तुझे कसम है खुदी को बहुत हलाक न कर,
तु इस मशीन का पुर्जा है तू मशीन नहीं।
बहुत मशहूर है आएं जरूर आप यहां,
ये मुल्क देखने लायक तो है, हसीन नहीं।
जरा सा तौर तरीकों में हेर- फेर करो,
तुम्हारे हाथ में कालर हो, आस्तीन नहीं।

तेरी इस दुनिया में ये मंजर क्यों है

तेरी इस दुनिया में ये मंजर क्यों है,
कहीं अपनापन, तो कहीं पीठ पीछे खंजर क्यों है।
सुना है तू इस संसार के हर जर्रे में रहता है,
फिर जमीन पर कहीं मस्जिद, कहीं मंदिर क्यों है।
जब रहने वाले दुनिया के हर बंदे तेरे हैं,
फिर कोई दोस्त तो कोई दुश्मन क्यों है।
तू ही लिखता है, हर किसी का मुकद्दर,
फिर कोई बदनसीब, और कोई मुकद्दर का सिकंदर क्यों है।

ये पंक्तियां सूर्यांश सिंह की कविताओं से ली गई हैं। दुनिया में मौजूद दुख, अन्याय और असमानता, कवि की रचना में गहराई से समाहित है।

सिंधु जल संधि के निलंबन का हासिल

सिंधु जल संधि पर हस्ताक्षर करने वाले नेताओं में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और पाकिस्तान के तब के राष्ट्रपति अयूब खान शामिल थे। दोनों देशों के बीच जल बंटवारे को लेकर 9 साल तक वार्ता चली और फिर सितंबर 1960 में सिंधु जल संधि पर समझौता हुआ। इस संधि में विश्व बैंक ने मध्यस्थता की थी।

- **भारत के पास सिंधु नदी के पानी को स्टोर करने की व्यवस्था ही नहीं है**
- **समझौते के निलंबन के बावजूद सिंधु नदी का पानी पाकिस्तान की तरफ जाता रहेगा।**

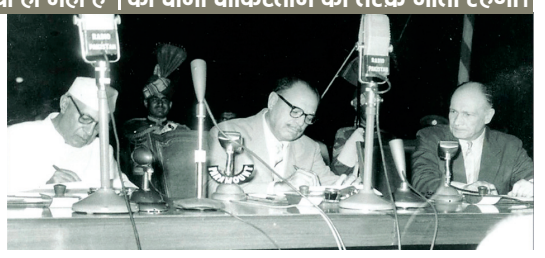

अक्षर संवाद

जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने कठोर कदम उठाते हुए सिंधु जल समझौता को निलंबित कर दिया है भारत के इस फैसले के बाद पाकिस्तान ने जहां तीखी प्रक्रिया व्यक्त की है वहीं उसे यह भी डर सता रहा है कि अगर हकीकत में पानी रुक गया तो पाकिस्तान में पीने के पानी की किल्लत के साथ खेती-बाड़ी सब कुछ चौपट हो जाएगा। दूसरी तरफ जानकारों का कहना है कि भारत भले ही समझौता रद्द कर दे लेकिन अभी वो पाकिस्तान का पानी रोक ही नहीं पाएगा क्योंकि भारत के पास पानी को स्टोर करने की व्यवस्था ही नहीं है, और व्यवस्था करने में अभी कई वर्ष लग सकते हैं। ऐसे में इस फैसले का पाकिस्तान पर कोई त्वरित असर नहीं पड़ने वाला है।

जल समझौते के निलंबन से हासिल क्या होगा?

सिंधु जल समझौता के निलंबन से भारत के उन प्रोजेक्ट को पूरा करने का काम तीव्र गति से शुरू हो जाएगा जो रुके हुए थे। जैसे जम्मू कश्मीर में भारत सरकार के द्वारा 4000 मेगावाट बिजली बनाने के लिए पांच हाइड्रा इलेक्ट्रिक पावर प्रोजेक्ट पर तैयारी चल रही है। यह पांच पावर प्लांट्स बुरसार, दुलहस्ती, सवालकोट, उरी और किरथाई हैं। मालूम हो कि इन सभी पावर प्लांट्स का काम शुरू हो चुका है। दूसरी तरफ समस्या ये थी कि इन प्रोजेक्ट्स को पूरा होने में सिंधु जल समझौता सबसे बड़ी बाधा बन रहा था, क्योंकि इन पावर प्रोजेक्ट्स को पूरा करने के लिए विश्व बैंक की निगरानी में पाकिस्तान की भी मंजूरी लेनी पड़ती थी। समझौता रद्द होने के बाद न पाकिस्तान से मंजूरी की जरूरत होगी और न ही विश्व बैंक से।

मदर्स डे पर विशेष

मदर्स डे यानी मां के प्रति सम्मान प्रकट करने का दिन

धीरेंद्र कुमार

मां के पैरों तले स्वर्ग है। पूरे ब्रह्मांड में मां से खूबसूरत कुछ भी नहीं। इसीलिए भारत सहित दुनिया के तमाम देशों में मां के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए मई के दूसरे रविवार को मदर्स डे मनाया जाता है। इस साल मदर्स डे 11मई 2025 को है। यह दिन मां के प्रेम, त्याग और योगदान को सम्मान देने के लिए समर्पित है।

मदर्स डे की शुरुआत कब हुई?

सन् 1907 में अमेरिका की ऐना जार्विस नाम की बेटी ने अपनी मां की याद में एक स्मरण सभा आयोजित की थी। इस दिन को यादगार बनाने के लिए उन्होंने अमेरिकी सरकार से इसे विशेष दिन के रूप में मनाने की मांग की, लिहाजा सन् 1914 में अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने मई के दूसरे रविवार को मदर्स डे के रूप में राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया। इसके बाद विश्व के दूसरे देशों में भी यह दिन मदर्स डे के रूप में मनाया जाने लगा।

शब्द हिंसा का बेलगाम समय!

जरूरी है मीडिया का भारतीयकरण

प्रो. संजय द्विवेदी

यह 'शब्द हिंसा' का समय है। बहुत आक्रमक, बहुत बेलगाम। ऐसा लगता है कि टीवी न्यूज मीडिया ने यह मान लिया है कि शब्द हिंसा में ही उसकी मुक्ति है। चीखते-चिल्लाते और दलों के प्रवक्ताओं को मुर्गों की तरह लड़ाते हमारे एंकर सब कुछ स्क्रीन पर ही तय कर लेना चाहते हैं। यहां संवाद नहीं है, बातचीत भी नहीं है। विवाद और वितंडावाद है। यह किसी निष्कर्ष पर पहुंचने का संवाद नहीं है, आक्रामकता का वीभत्स प्रदर्शन है।

निजी जीवन में बेहद आत्मीय राजनेता, एक ही कार में साथ बैठकर चैनल के दफ्तर आए प्रवक्तागण स्क्रीन पर जो दृश्य रचते हैं, उससे लगता है कि हमारा सार्वजनिक जीवन कितनी कड़वाहटों और नफरतों से भरा है। किंतु स्क्रीन के पहले और बाद का सच अलग है। बावजूद इसके हिंदुस्तान का आम आदमी इस स्क्रीन के नाटक को ही सच मान लेता है। लड़ता-झगड़ता हिंदुस्तान हमारा 'सच' बन जाता है। मीडिया के इस जाल को तोड़ने की भी कोशिशें नदारद हैं। वस्तुनिष्ठता से किनारा करती मीडिया बहुत खौफनाक हो जाती है।

सूचना और खबर के अंतर को समझिए

हमें सोचना होगा कि आखिर हमारी मीडिया प्रेरणाएं क्या हैं? हम कहां से शक्ति और ऊर्जा पा रहे हैं। हमारा संचार क्षेत्र किन मानकों पर खड़ा है। पश्चिमी मीडिया के मानकों के आधार पर खड़ी हमारी मीडिया के लिए नकारात्मकता, संघर्ष और विवाद के बिंदु खास हो जाते हैं। जबकि संवाद और संचार की परंपरा में संवाद से संकटों के हल खोजने का प्रयत्न होता है। हमारी परंपरा में सही प्रश्न करना भी एक पद्धति है। सवालों की मनाही नहीं, सवालों से ही बड़ी से बड़ी समस्या का हल खोजना है, चाहे वह समस्या मन, जीवन या समाज किसी की भी हो। इस तरह प्रश्न हमें सामान्य सूचना से ज्ञान तक की यात्रा कराते रहे हैं। आज 'सूचना' और 'ज्ञान' को पर्याय बनाने के जतन हो रहे हैं। सच यह है कि 'सूचना' तो समाचार,खबर या न्यूज का भी पर्याय नहीं है। सूचना कोई भी दे सकता है। वह कहीं से भी आ सकती है। सोशल मीडिया आजकल सूचनाओं से ही भरा हुआ है। किंतु ध्यान रखें खबर, समाचार और न्यूज के साथ जिम्मेदारी जुड़ी है। संपादकीय प्रक्रिया से गुजरकर ही कोई सूचना,समाचार बनती है। इसलिए संपादक और संवाददाता जैसी संस्थाएं साधारण नहीं है।

समाज की रूचि का करें परिष्कार

समाज की रुचि का परिष्कार और रूचि निर्माण भी मीडिया की जिम्मेदारी है। अपने पाठकों, दर्शकों को समय के ज्वलंत मुद्दों पर अपडेट रखना, उनकी बौद्धिक, नागरिक चेतना को जागृत रखना भी मीडिया का काम है। जबकि देखा यह जा रहा है कि पाठकों की पसंद के नाम पर कंटेंट में गिरावट लाने की स्पर्धा है। ऐसे कठिन समय में मीडिया के दायित्वबोध और सरोकारों पर बातचीत बहुत जरूरी है। प्रिंट मीडिया ने भी साहित्य, कलाओं, प्रदर्शन कलाओं और मनुष्य बनाने वाली सभी विधाओं को अखबारों से निर्वासन दे दिया है। मीडिया सिर्फ दर्शक बना रहे यह भी ठीक नहीं। उसे राष्ट्रीय भावना और जनपक्ष के साथ खड़े रहना चाहिए। देखा जाए तो समाज में फैली अशांति, स्पर्धा, लालसाओं और संघर्ष के बीच विचार के लिए सकारात्मक मुद्दे उठाने ही होंगे। मीडिया खुद अशांत है और गहरी स्पर्धा के कारण सही -गलत में चुनाव नहीं कर पा रहा है। ऐसे में मीडियाकर्मियों की जिम्मेदारी है कि खुद भी शांत हों और संवाद की शुचिता पर काम करें। वसीम बरेलवी लिखते हैं - **कौन सी बात कहां, कैसे कही जाती है। वो सलीका हो तो हर बात सुनी जाती है।**

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के जनसंचार विभाग में आचार्य और अध्यक्ष हैं।)

हर व्यक्ति नहीं हो सकता पत्रकार

यह कहना आजकल बहुत फैशन में है कि इस दौर में हर व्यक्ति पत्रकार है। हर व्यक्ति फोटोग्राफर है। हर व्यक्ति कम्युनिकेटर, सूचनादाता, मुखबिर हो सकता है, वह पत्रकार कैसे हो जाएगा? मेरे पास कैमरा है, मैं फोटो ग्राफर कैसे हो जाऊंगा। विशेष दक्षता और प्रशिक्षण से जुड़ी विधाओं को हल्का बनाने के हमारे प्रयासों ने ही हमारी मीडिया या संवाद की दुनिया को बहुत बड़ा नुकसान पहुंचाया है। यह वैसा ही है जैसे कपड़े प्रेस करने वाले या प्रिंटिंग प्रेस वाले अपनी गाड़ियों पर 'प्रेस' का स्टिकर लगाकर घूमने लगें। मीडिया में प्रशिक्षण प्राप्त और न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता के बिना आ रही भीड़ ने अराजकता का वातावरण खड़ा कर दिया है। लोकमान्य तिलक,महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, बाबासाहेब आंबेडकर, पं.जवाहरलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय, माधवराव सप्रे जैसे उच्च शिक्षित लोगों द्वारा प्रारंभ और समाज के प्रति समर्पित पत्रकारिता वर्तमान में कहां खड़ी है। भारत सरकार के आग्रह पर प्रेस कौंसिल आफ इंडिया ने पत्रकारों की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता के निर्धारण के लिए एक समिति भी बनाई थी, जिसके समक्ष मुझे भी अपनी बात रखने का अवसर मिला था। बाद में उस कवायद का क्या हुआ पता नहीं।

राष्ट्रीय महिला आयोग की रिपोर्ट में खुलासा

घरेलू हिंसा का शिकार महिलाओं की फेहरिस्त लंबी हो रही

शिवेंद्र सिंह, एडवोकेट, झारखंड हाई कोर्ट

आज आवाज है, कानून है, फिर भी महिलाओं की तकलीफों का, उनकी शिकायतों का सिलसिला थमा नहीं है। शिकायतों और सवालों की फेहरिस्त लंबी होती जा रही है। महिलाओं के द्वारा राष्ट्रीय महिला आयोग को इस वर्ष मिली शिकायतों पर गौर करें तो पता चलता है कि अर्थव्यवस्था के चमकते आंकड़ों और विकास के दावों के बीच ऐसा क्या है? जो हमारे समाज में महिलाओं के प्रति मानव से मानवीय बनने में बाधक बना हुआ है।

महिलाओं के खिलाफ घर से लेकर बाहर तक होने वाले अपराध निश्चित ही गंभीर समस्या हैं। आज भी हमारे पारिवारिक ढांचे में ऐसा बदलाव नहीं आ पाया है जिससे महिलाएं खुद को सुरक्षित महसूस कर सकें। राष्ट्रीय महिला आयोग को इस वर्ष 7,698 शिकायतें मिली हैं, जिनमें सबसे ज्यादा घरेलू हिंसा, मारपीट और धमकी देने के मामले हैं। घरेलू हिंसा की कुल 1,594 शिकायतें दर्ज की गईं।

- तीसरे स्थान पर मारपीट से जुड़ी शिकायतें रहीं, जिनकी कुल संख्या 950 है।
- बलात्कार और बलात्कार के प्रयास की 394 और छेड़छाड़ की 310 शिकायतें दर्ज की गईं।
- दहेज उत्पीड़न से संबंधित 916 शिकायतें।

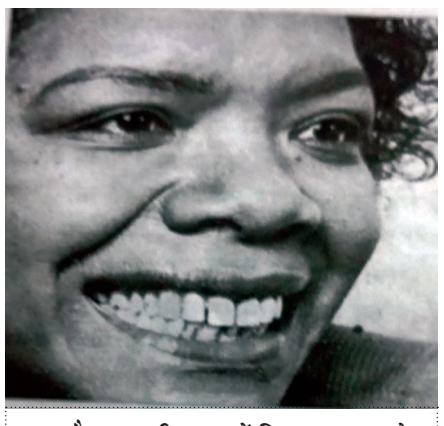

झूठ और मक्र की चादर में लिटा कर मुझको,
गर्क कर दो मुझे इतिहास के पन्नों में अभी,
रौंद कर कदमों तले धूल बना दो मुझको,
जिस तरह धूल उठे, मैं भी उठूंगी फिर से।

राष्ट्रीय महिला आयोग के अनुसार जनवरी से अप्रैल तक के आंकड़े

शिकायतें	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
घरेलू हिंसा	367	390	513	322
धमकी	268	260	288	170

हमारे समाज में स्त्री

पुरुष समानता और महिला सशक्तिकरण जैसे अभियान लंबे समय से चलाए जा रहे हैं, बावजूद इसके आज भी बड़ी संख्या में महिलाएं घरेलू हिंसा का शिकार हो रही हैं। महिलाओं के साथ हिंसा के मामले में अनपढ़ तो क्या पढ़े-लिखे लोग भी मानसिक दुराग्रह से ग्रस्त हैं। यह सामाजिक नाकामी के साथ-साथ कानून व्यवस्था के भी कमजोर पड़ने का सूचक है। सवाल है कि आखिर कब तक स्त्रियां गुमसुम अपने आप में सिमटी रहेंगी। शायद इसलिए कि घर परिवार में 'तेज मत बोलो' या 'शोभा नहीं देता' जैसे अनगिनत सीखें बचपन से ही उन्हें घुट्टी की तरह पिला दी जाती हैं, और स्त्री मां और आत्मा से परे देह मात्र रह जाती है। औरत को जुल्म सहने का आदी बना दिया गया है। सभ्यता भले ही चांद पर पहुंचने का दम भरती है पर औरतें "वह तो सीता मैय्या की तरह धरती की गोद में समा जाने को अभिशप्त हैं"।

प्रोजेक्ट अन्वेषण 2.0 : पूर्वी सिंहभूम जिला प्रशासन की अभिनव पहल ने युवाओं को दिलाई तकनीकी एवं औद्योगिक ज्ञान की अनुभूति

25 विद्यालयों के चयनित 750 बच्चों ने किया शैक्षणिक भ्रमण

अक्षर संवाद • जमशेदपुर

पूर्वी सिंहभूम जिला प्रशासन द्वारा विद्यार्थियों के समग्र विकास एवं व्यावहारिक शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू की गई प्रोजेक्ट अन्वेषण की पहली कड़ी जनवरी माह में 15 विभिन्न विद्यालयों के 450 विद्यार्थियों की सहभागिता के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुई थी। अब इस अभिनव पहल का दूसरा चरण "अन्वेषण 2.0" और भी व्यापक स्तर पर आयोजित किया गया, जिसमें जिले के 11 प्रखंडों से चयनित 25 सरकारी विद्यालयों के कक्षा 9 से 12 तक के 750 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

विद्यार्थी प्रातः अपने-अपने विद्यालय प्रांगण से उत्साह और ऊर्जा के साथ रवाना हुए तथा शहर में स्थित नौ प्रमुख संस्थानों का भ्रमण किया जिनमें जेएनटीवीटीआई, एनटीटीएफ, टीएसटीआई (एमसीसी), रूसी मोदी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, टाटा जूलॉजिकल पार्क, जेआरडी टाटा स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, टाटा मोटर्स, इंडो-डेनिश टूल रूम (आदित्यपुर) और एनएमएल-सीएसआईआर प्रमुख थे। इस शैक्षणिक भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को तकनीकी प्रशिक्षण, वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं, औद्योगिक प्रक्रियाओं, अपशिष्ट प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, विश्वस्तरीय खेल सुविधाओं एवं टाटानगर के ऐतिहासिक महत्व से प्रत्यक्ष रूप से परिचित कराना था। सभी संस्थानों में विद्यार्थियों का पंजीकरण, संस्थान प्रतिनिधियों द्वारा परिचय सत्र और संक्षिप्त प्रस्तुति के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। विद्यार्थियों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए उनके परिवहन की समुचित व्यवस्था की गई थी। प्रत्येक समूह के साथ दो-दो शिक्षक प्रतिनियुक्त थे।

इस दौरान छात्र-छात्राओं ने अपने जिज्ञासापूर्ण प्रश्न संस्थान प्रतिनिधियों से पूछे जिनका संतोषजनक समाधान उन्हें प्राप्त हुआ। पूर्वी सिंहभूम के उपायुक्त अनन्य मित्तल के दिशा-निर्देशानुसार इस शैक्षणिक भ्रमण के दौरान गर्मी को ध्यान में रखते बच्चों के स्वास्थ्य सुरक्षा का भी विशेष ध्यान रखा गया। उन्होने इस एक्सपोजर विजिट पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि शैक्षणिक यात्रा का यह अनुभव न केवल बच्चों के ज्ञान को समृद्ध करेगा बल्कि उनके भविष्य की मजबूत नींव रखने में भी मदद मिलेगा। जब विद्यार्थी प्रयोगशालाओं, औद्योगिक इकाइयों और विश्वस्तरीय संस्थानों को अपनी आंखों से देखते हैं, तो उनके भीतर कुछ नया करने की जिज्ञासा जन्म लेती है। यह एक्सपोजर उन्हें पढ़ाई से जोड़ने के साथ-साथ जीवन के वास्तविक आयामों से भी परिचित कराता है। इस यात्रा से मिली प्रेरणा उनके सपनों को दिशा देगी और वे आत्मविश्वास के साथ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होंगे।

जिज्ञासु मन अब केवल किताबों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि सृजनात्मकता, नवाचार और समाज में बदलाव लाने की सोच से भर जाएगा। इस प्रकार की पहल आने वाली पीढ़ी को सक्षम, सजग और संकल्पित नागरिक बनाने की दिशा में एक सार्थक प्रयास होगी।

बोकारो स्टील वर्कर्स यूनियन और मैनेजमेंट के बीच कर्मचारियों के हितों पर चर्चा

अक्षर संवाद • बोकारो

बोकारो स्टील वर्कर्स यूनियन (इंटक) और स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) के हायर मैनेजमेंट के बीच एक महत्वपूर्ण बैठक 6 मई को बोकारो प्रशासनिक भवन में आयोजित की गई। इस बैठक में माइंस क्षेत्र के बहुआयामी विकास, कर्मचारियों की समस्याओं के समाधान और नई योजनाओं पर विस्तार से चर्चा हुई। बैठक में इंटक के जनरल सेक्रेटरी बीएन.चौबे,अध्यक्ष बीएन. उपाध्याय, माइंस यूनिट के प्रेसिडेंट नवल किशोर सिंह, गुवा यूनियन के जोनल सेक्रेटरी तूफान घोष, ब्रांच सेक्रेटरी चंद्र कुमार शर्मा, बिनोद सिंह, कौशिक वालो, विजय बहादुर, किरीबुरू के जोनल सेक्रेटरी विद्युत सरकार एवं उनके प्रतिनिधि, मेघाहातुबुरु के दीपक राम और चिड़िया के विशाल कुमार समेत विभिन्न माइंस यूनियनों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

मैनेजमेंट की ओर से एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर (माइंस) विकास मनवाती, एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर (एचआर) राजेश्वरी बनर्जी, गुवा माइंस के मुख्य महाप्रबंधक कमल भास्कर, जीएम (एचआर) परवीन सिंह, जीएम (Estate) अर्नब दे, सीजीएम (एचआर) धीरेन्द्र मिश्रा, डॉक्टर इंद्रनील चौधरी (M&HS) और अन्य उच्चाधिकारी बैठक में शामिल हुए। बैठक में एस6 से एस8 ग्रेड तक के रिक्त पदों को जल्द से जल्द

आंतरिक भर्ती प्रक्रिया से भरने पर जोर दिया गया। साथ ही ठेका कर्मियों के अपग्रेडेशन और छूटे हुए कर्मचारियों को भी तत्काल लाभ दिलाने की मांग की गई।

डीएवी स्कूलों में नई शिक्षिकाओं की नियुक्ति, कक्षाओं के विस्तार और एनआईटी, आईआईटी, मेडिकल जैसी परीक्षाओं की तैयारी के लिए कोचिंग व्यवस्था को प्राथमिकता देने पर सहमति बनी। माइंस क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता दोहराई गई।

टाउनशिप की सड़कों की मरम्मत, स्ट्रीट लाइट व्यवस्था और क्षेत्रीय सौंदर्यीकरण के लिए विशेष योजनाएं लाने पर सहमति बनी, साथ ही नए क्वार्टर्स के निर्माण पर प्राथमिकता के साथ विचार किया गया। गुवा माइंस के विस्तार की योजनाओं को शीघ्र क्रियान्वयन की दिशा में आगे बढ़ाने का निर्णय लिया गया। इसके साथ यह भी विचार किया गया कि गुवा और आसपास के गांवों के युवाओं को प्राथमिकता के आधार पर रोजगार के अवसर दिए जाएंगे। गुवा हॉस्पिटल की स्वास्थ्य सेवाओं को दुरुस्त करने हेतु बोकारो से विशेष डॉक्टरों की टीम शीघ्र दौरा करेगी। मेडिकल सुविधा में संसाधनों की कमी को दूर करने पर जोर दिया गया। गुवा ओर माइंस कर्मचारियों के पीएफ ट्रस्ट को बर्नपुर से हटाकर बोकारो पीएफ ट्रस्ट में समाहित करने की योजना की मांग रखी गई ताकि भविष्य में भुगतान और अन्य सुविधाओं में किसी प्रकार की परेशानी न हो।

बारिश के जल को संरक्षित करने के लिए रेन हार्वेस्टिंग सिस्टम को गुवा माइंस में लागू किया जाएगा। साथ ही, माइंस की एक्सेस रोड की मरम्मत के लिए नए ग्रेडर की व्यवस्था की जाएगी। स्टील प्लांट की तर्ज पर माइंस में भी एडवांस री-डिजिनेशन प्रणाली को शीघ्र लागू करने का आश्वासन दिया गया, जिससे कर्मचारियों को उनकी योग्यता के अनुसार सम्मानजनक पद प्रदान किया जा सके। पूरी बैठक सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुई, जहां यूनियन और मैनेजमेंट दोनों पक्षों ने एक-दूसरे की बातों को गंभीरता से सुना और आम सहमति के आधार पर निर्णय लिए।

विश्व प्रवासन रिपोर्ट 2024

अनिश्चितता से जूझ रही दुनिया में प्रवासन की गतिशीलता और चुनौतियां

अक्षर संवाद

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन (आईओएम) ने विश्व प्रवासन रिपोर्ट 2024 जारी कर दी है। रिपोर्ट में वैश्विक प्रवासन के तरीकों में महत्वपूर्ण बदलाव का खुलासा किया गया है, जिसमें विस्थापित लोगों की रिकार्ड संख्या और अंतर्राष्ट्रीय धन प्रेषण में बड़ी वृद्धि शामिल है। रिपोर्ट बताती है कि अंतरराष्ट्रीय प्रवासन मानव विकास को आगे बढ़ाता है, लेकिन चुनौतियां सदैव बनी रहती हैं। रिपोर्ट में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन मानव विकास और आर्थिक वृद्धि का एक चालक बना हुआ है, जिसका प्रमाण सन् 2000 से 2022 तक अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण में 650 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि है जो 128 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 831 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी जनसंख्या वर्ष- 2024 के मध्य में

- 27 लोगों में एक आदमी अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी था।
- पूरी दुनिया में 304 मिलियन लोग अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी थे।
- सभी अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों में 10 प्रतिशत महिलाएं थीं।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार 2024 में अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों की अनुमानित संख्या 304 मिलियन थी। यह आंकड़ा 2020 के 275 मिलियन से अधिक है। निरपेक्ष संख्या में वृद्धि के बावजूद दुनिया के आबादी के संबंध में अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों की हिस्सेदारी पिछले कुछ वर्षों में अपेक्षाकृत स्थिर रही है, अर्थात 3.7% पर रही।

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों के लिए शीर्ष पांच मूल देश

भारत -18.5 मिलियन
चीन- 11.7 मिलियन
मेक्सिको- 11.6 मिलियन
यूक्रेन- 9.8 मिलियन
रूसी संघ- 9.1 मिलियन

2020 के मध्य से 2024 के मध्य तक प्रवासियों की संख्या में 124% की वृद्धि के बाद यूक्रेन शीर्ष पांच में शामिल हो गया, जो उस अवधि में सिर्फ 10 मूल देशों में सबसे बड़ी प्रतिशत वृद्धि थी। दूसरी ओर तीसरी सबसे बड़ी प्रतिशत वृद्धि वेनेजुएला-+52% और अफगानिस्तान+31.4% मैं हुई। मैक्सिको में सबसे छोटी प्रतिशत वृद्धि + 1.3% दर्ज की गई।

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों के लिए गंतव्य के शीर्ष देश-निरपेक्ष रूप से

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों के लिए शीर्ष पांच गंतव्य देश 2020 के मध्य से अपरिवर्तित रहे। संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, सऊदी अरब, यूनाइटेड किंगडम और फ्रांस। संयुक्त राज्य अमेरिका में 2020 से 2024 तक सबसे बड़ी वृद्धि देखी गई (+1.9 मिलियन प्रवासी)। जबकि सऊदी अरब और फ्रांस में इसी अवधि में सबसे छोटी वृद्धि (+0.6 मिलियन प्रवासी) दर्ज की गई।

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी कौन है?

कोई भी व्यक्ति जो अपने सामान्य निवास का देश बदलता है, वह अंतरराष्ट्रीय प्रवासी कहलाता है। प्रवासन मानव इतिहास का अभिन्न अंग है, जिसे अक्सर सनसनीखेज कहानियों द्वारा दबा दिया जाता है, लेकिन वास्तविकता कुछ और ही होती है। अधिकांश प्रवासन नियमित, सुरक्षित और क्षेत्रीय रूप से केंद्रित होते हैं, जो सीधे अवसरों और आजीविका से जुड़े होते हैं, फिर भी गलत सूचना और राजनीतिकरण ने सार्वजनिक चर्चा को धुंधला कर दिया है।

प्रवासियों द्वारा सबसे ज्यादा राशि किन देशों में भेजी गई

831 बिलियन डॉलर की राशि में से 647 बिलियन डॉलर प्रवासियों द्वारा निम्न और मध्य वर्ग वाले देशों में भेजे गए। यह धन उन देशों के सकल घरेलू उत्पाद का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकते हैं।

महिला प्रवासियों की संख्या

पिछले दशकों में महिला प्रवासियों की संख्या लगातार बढ़कर 2024 में 146 मिलियन हो गई है। वर्ष 2024 के मध्य में महिला प्रवासियों के हिस्सेदारी अपेक्षाकृत 48.08 प्रतिशत पर स्थिर रही।

प्रवासी महिलाओं की हिस्सेदारी

प्रवासी आबादी में महिलाओं के हिस्सेदारी क्षेत्रीय रूप से भिन्न है सबसे कम एशिया में 42 प्रतिशत है, सबसे अधिक यूरोप में 52 प्रतिशत है। उत्तरी अमेरिका में 51% ओशिनिया में 51 प्रतिशत, लैटिन अमेरिका और कैरेबियन 50% और अफ्रीका में 47 प्रतिशत है।

सापेक्ष रूप से : 2024 में गंतव्य के शीर्ष 10 देशों में जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में प्रवासियों में काफी भिन्नता होगी। (उदाहरण के लिए रूसी संघ 5.3%और संयुक्तअरबअमीरात 74%)।

जिन उद्देश्यों के लिए वक्फ बोर्ड की स्थापना की गई थी वो उसमें असफल रहा

आदिवासियों की जमीन को कब्जे से बचाएगा वक्फ अधिनियम

अक्षर संवाद

पिछले दिनों छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने एक राष्ट्रीय अखबार को दिए गए साक्षात्कार में कहा कि वक्फ संशोधन अधिनियम राज्य में आदिवासियों की जमीन पर अवैध कब्जे को रोककर उनके हितों की रक्षा करेगा।

उन्होंने कहा कि वक्फ बोर्ड की स्थापना मुस्लिम समाज के गरीब, पिछड़े, महिलाओं और पसमांदा मुसलमानों के लिए की गई थी, परंतु यह अपने उद्देश्यों में असफल रहा। मुस्लिम समाज के ही कुछ प्रभावशाली लोगों ने वक्फ संपत्तियों

को पट्टे पर लेकर मॉल और होटल बना लिए।

इससे गरीब मुसलमान का कोई फायदा नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ आदिवासी बहुल राज्य है, और इस संशोधित अधिनियम से यहां आदिवासियों की जमीन भी सुरक्षित रहेगी। वक्फ बोर्ड उनकी जमीन पर भी नजर नहीं डाल पाएगा।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के बोर्ड में

भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे परमेश्वरन अय्यर

अक्षर संवाद • विश्व बैंक के कार्यकारी निदेशक परमेश्वरन अय्यर को अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के बोर्ड में अस्थाई रूप से भारत के नामित निदेशक की जिम्मेदारी दी गई है। मालूम हो कि भारत सरकार ने आईएमएफ में कार्यकारी निदेशक के रूप में केवी सुब्रमण्यम की सेवाओं को उनका तीन साल का कार्यकाल पूरा होने से छह महीना पहले समाप्त कर दिया था। इसके बाद कार्यकारी निदेशक का पद रिक्त था।

शीर्ष 10 देशों में से आठ में प्रवासियों के अनुपात में वृद्धि देखी गई

स्पेन	+ 3.5%	फ्रांस	+0.7%
जर्मनी	1.9%	कनाडा	+0.3%
यूनाइटेड किंगडम	1.5%	संयुक्त राज्य अमेरिका	+0.3%
ऑस्ट्रेलिया	+0.8%	रूसी संघ	+0.3%

जहां सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात में गिरावट देखी गई वहीं कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, रूसी संघ, संयुक्त राज्य अमेरिका और स्पेन 2015 और 2024 के बीच लगातार अंतरराष्ट्रीय प्रवासियों के लिए शीर्ष 10 गंतव्य देशों में शामिल रहे। हालांकि समय के साथ उनकी रैंकिंग बदल गई।

जमशेदपुर के सीएच एरिया में मॉक ड्रिल

पूर्वी सिंहभूम के उपायुक्त ने किया मॉक ड्रिल का नेतृत्व

अक्षर संवाद • जमशेदपुर

7 मई को जमशेदपुर स्थित सीएच एरिया में पूर्वी सिंहभूम के उपायुक्त अनन्य मित्तल के नेतृत्व में संध्या 4 बजे से 7 बजे तक मॉक ड्रिल किया गया। इस दौरान एयर स्ट्राइक से निपटने के उपाय, परिस्थिति के अनुरूप समय पर प्रतिक्रिया, संचार एवं समन्वय, संसाधनों की उपलब्धता एवं उसके उपयोग का रियल टाइम अभ्यास, मूल्यांकन व समीक्षा की गई। मॉक ड्रिल के दौरान तीन घंटे की अवधि में आपदा की स्थिति में सामान्य प्रशासन, पुलिस प्रशासन, सिविल डिफेंस, अग्निशमन, स्वास्थ्य सेवा, नगर निकाय प्रशासन, सिविल सोसायटी की भूमिका एवं उनके रिस्पॉन्स का रियल टाइम मूल्यांकन किया गया। उपायुक्त सह अध्यक्ष जिला आपदा प्रबंधन समिति ने कहा कि सभी एजेंसियों का कार्य तथा आम नागरिकों का सहयोग सराहनीय रहा। कुछेक स्तर पर सुधार की आवश्यकता है जिसे दुरूस्त किया जाएगा। अपराह्न 4 बजे एयर रेड सायरन बजते ही पूरे क्षेत्र में ब्लैक आउट की घोषणा की गई एवं कमांडिंग ऑफिसर को सूचित किया गया। 5 मिनट बाद कमांडिंग ऑफिसर एसडीएम धालभूम एवं सिटी एसपी तथा अन्य संबंधित एजेंसियों के पदाधिकारी कंट्रोल रूम

पहुंचे। आपसी विमर्श के 15 मिनट बाद कमांडिंग ऑफिसर के निर्देश पर कम्यूनिकेशन ड्रिल शुरू हुई तथा सभी एजेंसियों को अलर्ट मोड में रहने का निर्देश दिया गया। 25 मिनट बाद जिला दण्डाधिकारी सह उपायुक्त एवं वरीय पुलिस अधीक्षक स्थिति का आकलन करने सेंट्रल कमांड रूम पहुंचे। ठीक 5 बजे सीएच एरिया स्थित महारानी मेंशन में एयर स्ट्राइक की सूचना प्राप्त हुई। उक्त सूचना पर त्वरित प्रतिक्रिया देते हुए कमांडिंग ऑफिसर सभी संबंधित एजेंसियों के साथ घटनास्थल के लिए कंट्रोल रूम से रवाना हुए तथा 10 मिनट के अंदर राहत-बचाव कार्य शुरू कर दिया गया। मौके पर सिविल डिफेंस, अग्निशमन की टीम के द्वारा घायल तीन लोगों को रेस्स्यू करते हुए टीएमएच इलाज के लिए भेजा गया वहीं अपार्टमेंट में रह रहे अन्य लोगों को सुरक्षित बाहर निकालते हुए सेफ हाउस के रूप में चिन्हित निर्मल गेस्ट हाउस भेजा गया। संध्या 7 बजे पीस सायरन बजते ही विद्युत सेवा बहाल की गई। संध्या 7:10 बजे जिला के वरीय पदाधिकारी सेंट्रल कमांड रूम पहुंचे तथा पूरे मॉक ड्रिल की डी-ब्रिफिंग की गई। इसके पूर्व सुबह 11 बजे से स्कूली बच्चे, कारखाना, कंपनी, एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन में भी मॉक ड्रिल कर लोगों के बीच एयर स्ट्राइक के दौरान एहतियाति कदम उठाये जाने की जानकारी दी गई।

झारखंड ग्रुप ऑफ माइंस की बैठक

सीटू ने मजदूरों के मुद्दों को उठाया

अक्षर संवाद • चाईबासा

झारखंड ग्रुप ऑफ माइंस सेल बी. एस. एल. के साथ सेल एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिस में आयोजित मीटिंग में सीटू पार्टी के कार्यकर्ताओं की पूर्ण भागीदारी रही। सीटू पार्टी के महामंत्री रमेश गोप, मलय पानीग्रही, मनोज मुखर्जी, रमेश गोप, अशोक बालमुचु, श्याम पासवान रिंकू चक्रवर्ती, बीडी प्रसाद ने मजदूरों की समस्याओं को प्रमुखता से रखा। सीटू पार्टी के महामंत्री रमेश गोप ने कहा कि इस बात की जीती जागती मिसाल है कि कई बार अलग होना ज्यादा बेहत्तर तरीके से एकजुट होने के लिए अनिवार्य और जरूरी हो जाता है। 1970 में अगर सीटू नहीं बनाई गयी होती तो आज भी देश के श्रमिकों का शोषण होता रहता। मौके पर उपस्थित सैकड़ों श्रमिकों ने यूनियन के प्रति अभूतपूर्व एकता दिखाई।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक अरविंद सिंह द्वारा डी बी कॉर्प लिमिटेड हाता रोड, करनडीह, इमली चौक, जमशेदपुर, झारखंड से मुद्रित एवं जगबंधु कॉलोनी, बाल बिहार, सोनारी, जमशेदपुर पूर्वी सिंहभूम-831011 झारखंड से प्रकाशित । संपादक : अरविंद सिंह* (अवैतनिक सेवा) : 9546772436,
RNI No.-JHAHIN/2017/74088. समाचार पत्र से संबंधित विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र जमशेदपुर होगा। (किसी भी तरह का दावा प्रकाशन के एक महीने के अंदर तक मान्य होगा।) *समाचार चयन के लिए पी. आर. बी एक्ट के तहत जिम्मेदार।